मधु काँकरिया के औपन्यासिक पात्रों का राजनीतिक चेतना

गुड्डू कुमार सिंह

1990 के दशक से अपनी साहित्य कथा संसार की यात्रा शुरु मधु काँकरिया का अधिकांश लेखन सामाज में फैले तमाम तरह की रुढियों और अर्न्तविरोधों की पड़ताल करते हुए तक जाती है और पाठकों के समक्ष पूरी साफग़ोई के साथ आती है। इनके उपन्यासों के सभी प्रमुख पात्रों में राजनीतिक समझ है। इन पात्रों के माध्यम से लेखिका ने राजनीति के पहलुओं को उभारने की कोशिश की है। इनके उपान्यासों में युग विशेष की ऐतिहासिक यर्थाथ की रक्षा करते हुए नक्सलवादी आंदोलन, आतंकवाद, कश्मीर की स्थिति, कश्मीर पर राजनीति, आर्मी की दशा व उसपर दबाब, आर्मी का अत्याचार, पुलिस व्यवस्था, शोषण, धार्मिक कर्म–काण्डों व ढोगीं बाबाओं का पर्दाफाश, धर्म के नाम पर भोली–भाली जनता का मानसिक, शारीरिक तथा आर्थिक शोषण आदि को गंभीरतापूर्वक उठाया गया है। इनके उपन्यासों की सबसे महत्वपूर्ण बात है पाठकों को प्रत्यक्ष रुप से साहित्य के माध्यम से ऐतिहासिक समस्याओं के कारणों का सामना होता है। चाहे कश्मीर समस्या हो या नक्सलवाद की समस्या हो इन तत्कालिक राष्ट्रीय मुद्दों को मधु जी बेबाकी से उठाया है।